

**दास्य पुं.** (तत्.) 1. दे. दासता 2. भक्ति के नौ प्रकारों में से एक। इसमें स्वयं को प्रभु का दास मानकर सेवाभाव से आराधना करना।

**दास्यासक्ति स्त्री.** (तत्.) दास्य भावना से की जानेवाली आराधना या इस प्रकार की प्रवृत्ति।

**दाह पुं.** (तत्.) 1. जलाने की क्रिया 2. जलन, ताप, शरीर का वह रोग जिसमें जलन होती है 3. मानसिक कष्ट।

**दाहक वि.** (तत्.) जलाने वाला पुं. (तत्.) 1. अग्नि 2. चीता 3. (रसा.) वह कर्मक जो सजीव ऊतकों को नष्ट कर दे जैसे- सल्फ्यूरिक अम्ल/ (कॉस्टिक)।

**दाहकता स्त्री.** (तत्.) 1. जलाने का भाव 2. जलाने की शक्ति 3. जलाने की क्रिया।

**दाहकत्व पुं.** (तत्.) दे. दाहकता।

**दाहकपोटाश पुं.** (तत्+अं) रसा. पोटैशियम हाइड्रॉक्साइड, श्वेत, भंगुर और प्रस्वेद्य ठोस पदार्थ जो जल में घुलकर तीव्र क्षारीय और दाहक विलयन बनाता है, इसका उपयोग साबुन उद्योग में, विरंजन इत्यादि में होता है।

**दाहकरजत पुं.** (तत्.) (रसा.) सिल्वर नाइट्रेट, यह षड्भुजी या समचतुर्भुजी क्रिस्टलों में पाया जाता है।

**दाहकसोडा पुं.** (तत्+अं.) सोडियम हाइड्रॉक्साइड, इसके गुण धर्म दाहक पोटाश की ही तरह होते हैं, अंतर इतना ही है कि दाहक पोटाश पोटैशियम क्लोराइड के विद्युत अपघटन से बनता है जबकि दाहक सोडा सोडियम क्लोराइड के विद्युत अपघटन से बनता है।

**दाहक्रिया स्त्री.** (तत्.) मृत्यु के उपरांत शवदाह की प्रक्रिया, दाहकर्म।

**दाहगृह पुं.** (तत्.) सरकारी व्यवस्थानुसार शवों को बिजली से जलाने का स्थान, विद्युत-शवदाह-गृह।

**दाह ज्वर पुं.** (तत्.) ज्वर (बुखार) का एक प्रकार जिसमें शरीर में तीव्र जलन होती है।

**दाहदग्ध वि.** (तत्.) जलाने के कारण जली हुई अवस्था वाला।

**दाहन पुं.** (तत्.) स्वयं या किसी अन्य के माध्यम से जलाने का कार्य करने का भाव।

**दाहना स.क्रि.** (तद्.) जलाना।

**दाहसंस्कार पुं.** (तत्.) अंतिम संस्कार, मृत्यु हो जाने के उपरांत शरीर का जलाने का कर्म तथा अन्य कर्म, अंत्येष्टि कर्म।

**दाहस्थल पुं.** (तत्.) शवदाह का स्थान, श्मशान।

**दाह हरण पुं.** (तत्.) ताप या जलन मिटाने वाली ओषधि जैसे खस।

**दाहा पुं.** (फा.) ताजिया, मुहर्रम का समय।

**दाहिना पुं.** (तद्.) दे. दायँ।

**दाहिने होना अ.क्रि.** (देश.) 1. दायी और होना 2. अनुकूल होना।

**दाही वि.** (तत्.) जलाने वाला, जलन बढ़ाने वाला, कष्ट देने वाला।

**दिआ पुं.** (तद्.) दे. दिया।

**दिक वि.** (फा.) परेशान, जिसे बहुत तंग किया गया हो, उकताया हुआ, आजिज पुं. यक्ष्मा (टी.बी.) रोग में होने वाला या हमेशा रहने वाला हलका ज्वर, तपेदिक।

**दिक् स्त्री.** (तत्.) 1. दिशा, वह अनंत रेखा या उस पर स्थित एक सुदूर बिंदु जिसकी ओर कोई व्यक्ति, वस्तु, दृष्टि या बिंदु इत्यादि गमन करे, इस प्रकार हमारे चारों ओर असंख्य दिशाएँ हैं। इनमें प्रमुखता के क्रम में चार, छह, आठ या दस (या विशेष रूप से समुद्र यात्रा के प्रसंग में सोलह) दिशाएँ मानी जाती हैं विशेष. मुख्य रूप से चार दिशाएँ मानी जाती हैं पूर्व, पश्चिम, उत्तर और दक्षिण, भूगोल के अनुसार पृथ्वी का काल्पनिक अक्ष, जिसके आधार पर पृथ्वी घूर्णन करती है, उत्तर और दक्षिण दिशा का निर्धारण करता है तथा घूर्णन की दिशा पूर्व तथा उसकी विपरीत दिशा पश्चिम (पश्च=पिछला भाग) कहलाती है, (इसीलिए उत्तरी ध्रुव एवं दक्षिणी